ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 43 कुल पृष्ठ-8 6 से 12 जुलाई, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 आ. कृ.-03

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती तथा स्व. श्री तुलाराम आर्य परघनिया के 97वें प्राकट्य वर्ष के उपलक्ष्य में

वर्ष भर चलने वाले कार्यक्रमों का उद्घाटन समारोह रायपुर में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

छत्तीसगढ़ के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल रहे मुख्य अतिथि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव कार्यक्रम के मुख्य संयोजक रहे

आर्य समाज के संस्थापक महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं स्व. श्री तुलाराम आर्य परघनिया के 97वें प्राकट्य वर्ष के उपलक्ष्य में 2 जुलाई, 2023 रविवार को शहीद मेमोरियल सभागार, रायपुर में दो वर्ष तक चलने वाले कार्यक्रमों का उद्घाटन समारोह छत्तीसगढ़ के यशस्वी मुख्यमंत्री, गरीबों, पिछड़ों, दलितों तथा आदिवासियों के नेता श्री भूपेश बघेल की गरिमामयी उपस्थिति एवं उद्बोधन के साथ किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। छत्तीसगढ़ के सभी 33 जिलों से लोग इस समारोह में सम्मिलित हुए। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन एवं नेतृत्व छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी ने किया, उनके अतिरिक्त विख्यात वैदिक विद्वान् डॉ. कमलनारायण आचार्य, सभा के मंत्री श्री भुवनेश कुमार साहू, कोषाध्यक्ष श्री दीपक पाण्डेय, श्री पंकज कुमार, श्री ऋषिराज आर्य आदि का विशेष सहयोग एवं

योगदान रहा। कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन उत्साह एवं जोश के साथ नारे लगाकर सभागार को बीच–बीच में गुंजाते रहे। स्कूल के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी एवं सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज की स्थापना से लेकर वर्तमान तक एवं प्रमुख उपलब्धियों पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रणेता थे। उनकी प्रेरणा से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, शहीदे आजम भगत सिंह व उनका पूरा परिवार, अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खाँन, भाई परमानन्द तथा भाई बालमुकुन्द, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय आदि स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। स्वामी दयानन्द नारी जाति तथा अछूतों के प्रबल प्रवक्ता थे। उन्होंने जन्मना जाति के आधार पर ऊँच–नीच, आर्थिक असमानता एवं सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और आर्य समाज की स्थापना करके संसार का उपकार करने का उद्देश्य एवं एजेण्डा निर्धारित किया। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती साम्प्रदायिक सौहार्द के समर्थक थे।

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती तथा स्व. श्री तुलाराम आर्य परघनिया के 97वें प्राकट्य वर्ष के उपलक्ष्य में

उन्होंने 1877 में दिल्ली दरबार बुलाकर विभिन्न मत–सम्प्रदाय के धर्माचार्यों एवं प्रमुख नेताओं को एकत्रित किया और मिलकर कार्य करने की प्रेरणा दी। आज आर्य समाज उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है और सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर कार्य कर रहा है। आर्य समाज चाहता है कि जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, नशाखोरी मुक्त, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, नारी उत्पीड़न मुक्त तथा शोषण मुक्त समाज बने। आर्य समाज जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता का घोर विरोधी है। स्वामी आर्यवेश जी ने माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल को उनके द्वारा प्रदेश की जनता के लिए किये जा रहे कल्याणकारी कार्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि जो लोग अपने आपको राम का भक्त बताते हैं किन्तु कार्य राम के आदर्शों के विपरीत करते हैं। ऐसे लोगों को श्री भूपेश बघेल जी ने छत्तीसगढ़ में लगभग 22 किलोमीटर लम्बे राम वन गमन पथ का निर्माण करके सच्चे रामभक्त होने का मजबूत प्रमाण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कोठान योजना लागू करके गोवंश की रक्षा एवं संवर्द्धन की महत्त्वपूर्ण योजना क्रियान्वित की है। इसी प्रकार समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े आदमी के जीवन में खुशहाली लाने के लिए स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लाखों स्त्री–पुरुषों को रोजगार देने का कार्य किया है। इसी प्रकार अपने प्रदेश में संस्कृत विद्यालयों एवं गुरुकुलों को विशेष सहयोग देने का कार्य वे कर रहे हैं और आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आगामी दो वर्षों तक चलने वाले विविध कार्यक्रमों का विधिवत शुभारम्भ करने के लिए समारोह में उपस्थित हुए हैं। हमें पूरी आशा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के संदेश घर–घर पहुंचाने में माननीय मुख्यमंत्री जी एवं छत्तीसगढ़ सरकार का भरपूर सहयोग आर्य सामाजिक गतिविधियों को प्राप्त होगा और महर्षि की द्वितीय जन्मशती ऐतिहासिक रूप से मनाई जायेगी। स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान के दौरान सभागार में उपस्थित जनसमूह अत्यन्त उत्साहित एवं जोश से परिपूरित था। मुख्यमंत्री महोदय के साथ आये अन्य मंत्री एवं नेतागण भी आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द जी की उपलब्धियाँ सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने उद्गार प्रगट करते हुए सर्वप्रथम उन्हें नमन किया और बाद में उन्होंने कहा कि आज जिस क्षेत्र में हम देखते हैं उसी क्षेत्र में महिलाएं सफलता का परचम लहरा रही हैं। चाहे सी. बी.एस.सी. की परीक्षाएं हों या आई.ए.एस. की स्पर्धा हो प्रमुख स्थानों पर लड़कियाँ दिखाई देती हैं। इसके पीछे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की भूमिका सर्वाधिक दिखाई देती है। महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा और दलितों की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया था। उन्होंने समाज की अनेक कुरीतियों को चुनौति देकर रुढ़ियों एवं पाखण्डों को जड़ से उखाड़कर फेंका था। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही है। ऐसे महान् ऋषि की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आज हम सब उन्हें स्मरण कर रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य है। आज के दिन हमें संकल्प लेना चाहिए कि महर्षि दयानन्द जी के संदेश जन–जन तक पहुंचायेंगे और उनके उपकारों को कभी भी नहीं भूलेंगे। मुख्यमंत्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों तथा इस समारोह की अध्यक्षता कर रहे स्वामी आर्यवेश जी का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया और कहा कि मुझे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को स्मरण करने का आपने जो अवसर प्रदान किया इसके लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा। इसके साथ उन्होंने बताया कि छत्तीगढ़ के महान् भामाशाह तुलाराम परघनिया जी ने महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर स्त्री शिक्षा, अनाथ रक्षा तथा वेदों के प्रचार–प्रसार के लिए अपनी पैतृक सम्पत्ति जो 11 गांव में स्थित थी 1400 एकड़ जमीन 1926 में आर्य सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए दान स्वरूप प्रदान कर दिया। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उस समय तुलाराम परघनिया जी ने समाज के उत्थान के लिए अनेकानेक कार्य किये जो अनुकरणीय एवं अविस्मरणीय है। मुझे घटना याद आती है कि उस समय इस क्षेत्र की महिलाएं ब्लाउज (पोलका) नहीं पहनती थीं। सर्वप्रथम तुलाराम परघनिया जी ने स्त्रियों के सम्मान के लिए महिलाओं को ब्लाउज पहनने का वकालत किया। जिसके कारण जिस समाज से वे आते थे उस समाज के लोगों ने उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया था। आम जनता के हितों की रक्षा के लिए वे अपने घर में ही तहसील का ऑफिस खोल रखे थे, जहां पर लोगों को न्याय दिलाने का कार्य किया जाता था क्योंकि वे स्वयं ही तहसीलदार थे। ऐसे विभूति को आज उनके 97वें प्राकट्य दिवस एक सूरता के रूप में याद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के संस्कृति मंत्री श्री अमरजीत भगत और पिछड़ा आयोग के अध्यक्ष श्री डी. एन. वर्मा, श्री गिरीश देवांगन कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त, अध्यक्ष खनिज विकास निगम भी सम्मिलित हुए।

ऊर्जावान नवयुवक श्री क्षितिश चन्द्राकर का समारोह की सफलता में अविस्मरणीय योगदान रहा और उन्होंने पूरी व्यवस्था पर अपनी पैनी दृष्टि बनाई रखी। उनके अनुभव का सकारात्मक लाभ इस समारोह को प्राप्त हुआ। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हो गया।

वैदिक जीवन मूल्यों की सार्वभौमिकता

- डॉ० स्नेहलता गुप्ता

चारों वेद मानवीय मूल्यों के निर्णायक ग्रन्थ हैं। योग के यम नियमों, धर्म के दसों लक्षणों और चारों पुरुषार्थों के जीवन्त उदाहरण हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह१क तथा शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानख– ये यम नियम, धैर्य, क्षमा (इन्द्रियों का) दमन, अस्तेय, शौच (पवित्रता) इन्द्रिय–निग्रह बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध (क्रोध न करना) – धर्म के ये दस लक्षण,२क धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष– ये चारों पुरुषार्थ ये सब मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में संक्षेप में इनको सप्तमर्यादा के रूप में परिगणित करते हुये लिखा है कि– हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्यभाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों के सहयोग का नाम सप्त मर्यादा है, इनमें से जो एक भी मर्यादा का उल्लंघन करता है अर्थात् एक भी पाप करता है, वह पापी होता है।३

हिंसा का निषेध करते हुए यजुर्वेद (वा०स०– ६/६२) में लिखा है कि मनुष्य को न तो सर्प के समान विषैला होना चाहिये और न व्याघ्रादि के समान हिंसक। वेदों में पशुवध और मांस भक्षण को पूर्णतया अनुचित माना है।४ और 'मा हिंसी' शब्द के द्वारा यत्र तत्र इसका विरोध भी किया है। यज्ञ को अध्वर कहने का तात्पर्य यज्ञ के अहिंसक होने का ही पर्याय है।५ महाभारत के अनुशासन पर्व में हिंसा के विपरीत लिखा है कि, अहिंसा परम धर्म है, परम तप है, परम सत्य है, इसी से धर्म प्रवर्तित होता है,६ किन्तु हिंसा के भय से ग्रस्त मनुष्य सदाचार के पथ से विचलित होकर पाप करने के लिये प्रवृत्त हो सकता है इस भय से छुटकारा पाने का किसी भी ग्रन्थ में अथवा अन्यत्र कोई उपाय नहीं है, हाँ वेदों में अवश्य ही अभय प्राप्ति का एक ऐसा मन्त्र है, जिसमें मित्र से, शत्रु से ज्ञात से, अज्ञात से, रात्रि में, दिन में एवं समस्त दिशाओं में भय रहित होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है।७ इस प्रकार भयरहित एवं अहिंसक व्यक्ति की शान्ति प्रिय होता है। और शान्ति का अभिप्राय है– ईर्ष्या, द्वेष, कलह और लड़ाई आदि की निवृत्ति, राग द्वेष दुःख दरिद्रता की समाप्ति, पशु पक्षियों की हत्या से उत्पन्न करुण क्रन्दन का अन्त, वृक्षों पर चलती हुई कुल्हाड़ी की रोक। अथर्ववेद का ऋषि मानवों को परामर्श देता हुआ कहता है कि जीवन रूपी पथरीली नदी बह रही है, उठो और प्रयत्न से पार करो, जो हमारे कल्याण के विरुद्ध हैं, उनका साथ छोड़ों।८ इस प्रकार वैदिक विचारधारा अहिंसा की पक्षधर होने पर भी शत्रुओं के विनाश की कामना करती है। **शठे शाठ्यं समाचरेत्** की नीति को उचित ठहराती है।९ विरुद्ध आचरण करने वाले व्यक्तियों को भस्मसात् करने का आदेश देती है।१० किन्तु आज हमारे देश में राजनीति के नियम कानून भी वेदों के इस मानवीय मूल्य का उपहास कर रहे हैं। एक मुजरिम जो हमारे लोकतन्त्र के प्रतीक संसद भवन पर हमला करता है, वहां के रक्षकों को मौत के घाट उतार देता है, पुलिस उसे पकड़ती है और न्यायालय उसे फांसी की सजा सुनाता है देश की जनता २० अक्टूबर २००६ पर (जिस दिन उसे फांसी की सजा होनी निश्चित हुई थी) नज़रे गड़ाये रही किन्तु देश के विश्वासघाती राजनेताओं ने अपनी कुर्सी की सुरक्षा के लिये उसे फांसी नहीं होने दी। जेल में भी उसे सारी सुख सुविधायें उपलब्ध हैं।

शत्रुओं के लिये अथर्ववेद में लिखा है कि शत्रुओं को राजा बाहु छेदन करके विनष्ट कर दे। ऋग्वेद में स्थान–स्थान पर चोर हिंसक व्यभिचारी घृतव्यसनी स्तेन तस्कर आदि विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी शत्रुओं को समूल नष्ट करने का संकेत है (ऋग्वेद–२/२३/१६, ऋग्वेद– ६/५५/३) किन्तु इस प्रकार शत्रुओं के विनाश में प्रयत्न तथा युक्ति से काम लेना चाहिये (अथर्ववेद– ४/३२/३) क्योंकि सब काम धर्मानुसार सत्य असत्य को विचार कर करने चाहिये। वस्तुतः अहिंसा अनाचार अन्याय और आड़म्बर के दृढ़ दुर्ग सत्य के द्वारा ही धराशायी हो सकते हैं, इसीलिये प्रजापति ने सत्य और असत्य को समझ बूझकर अलग किया है। असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा उत्पन्न की है (यजुर्वेद १६/७७)

मानवीय मूल्यों में सत्य का स्थान सर्वोपरि है। त्रिकालदर्शी–ऋषियों ने दैवी जगत के सत्य को 'ऋत्' और लौकिक जगत के सत्य को 'सत्य' कहा है। वेद में **ऋत् च सत्यञ्चायीद्धात्तपसोऽध्यजायत** (अथर्ववेद १२/१/१) कह कर ऋत और सत्य का एक साथ भी उल्लेख है। ऋग्वेद (१०/६२/३) में यज्ञ को ऋत का साक्षात् स्वरूप मानते हुए लिखा है कि यज्ञ करना मानो सत्य को ही प्रतिष्ठापित करना है। इसी सत्य स्वरूप ऋत के मार्ग का अनुसरण समस्त पापों का विनाशक है ऋग्वेद १/४/१ सत्यता के साथ–साथ वाणी की मधुरता का भी वेदों में उल्लेख है११ संस्कृत के किसी कवि का कथन है कि **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।**

लोकाचार में भी यह कहा जाता है कि–

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।

किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह भी चलता है–

ऐसी वाणी बोलिये, कि सबसे झगड़ा होय।
पर उससे झगड़ा ना करें, जो आपसे तगड़ा होय।

वस्तुतः आज ऋत का स्थान अनृत ने, सत्य का असत्य ने, संयम का असंयम ने, धर्म का अधर्म ने, सन्तोष का असन्तोष ने, कर्त्तव्य निष्ठा का कर्त्तव्य हीनता ने और शीलता का अश्लीलता ने ले लिया है। आज की भांति वेदकालीन युग में मानव के पास कोठी, बंगले, गाड़ी, दूरदर्शन आदि भोग ऐश्वर्य के साधन नहीं थे वे तो अन्न, धन, गौओं पशुओं, कीर्ति प्रजा (पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि) को ही ऐश्वर्य समझ कर (अथर्ववेद १/३१/४) इनकी याचना करते थे,१२ किन्तु आज का युग परिवार नियोजन का युग है संयुक्त परिवारों का स्थान छोटे परिवारों ने ले लिया है।

ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य धारण कर वीर पुत्रों को जन्म देने वाली और सहन शील स्वभाव वाली है।१३क उग्र वर्चस्विनी कठिन गुण कर्म स्वभाव वाली थी एवं शोभा से सम्पन्न नारियां ही समाज में समादृत होती हैं।ख ऐसी स्थिर स्वभाव वाली ओजस्विनी नारियां वेद के युग की शोभा थीं। उस काल में नारियों को यह आदेश भी था कि उनके ओष्ठ प्रान्त और कटि का निम्न भाग भी न दिख सके। (ऋग्वेद ८/३३/१६) कहाँ पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित आज की स्वच्छन्दचारिणी मल्लिका शेरावत जैसी नारियाँ।

नारियाँ आज ऐसी बनी मार हैं,
न लज्जा से जिनका सरोकार है।
होड़ फैशन की हरदम लगी है यहाँ,
थोड़े, कपड़ों में नंगा बदन आज है।

लोपामुद्रा, गार्गी जैसी नारियों से गौरवान्वित था वह वेद का युग, जहाँ नारी–आदर्श बहन, आदर्श पत्नी व आदर्श माता थी। वैदिक युग का वह सुदृढ़ समाज ऐसे परिवार की कल्पना करता था, जहां माता–पिता सन्तान के कल्याण की कामना करते थे वहां पुत्र भी अपने माता–पिता के कल्याण की कामना करता था।१४ (अथर्ववेद १/३१/४) ईश्वर की स्तुति द्वारा वह अपने साथ–साथ पिता द्वारा किये गये पापों से भी मुक्ति की याचना करता था। (ऋग्वेद ७/८६/५) वेद के परवर्ती युग उपनिषद काल में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है।

कठोपनिषद् का दृष्टान्त है वाजश्रवस ऋषि का पुत्र नचिकेता जब देखता है कि उसके पिता दूध देने में असमर्थ बूढ़ी गायों को दान कर रहे हैं तब वह व्यथित होकर सोचता है कि ऐसे निकृष्ट दान से मेरे पिता कहीं यजुर्वेद के **अन्धेन तमसावृता**१५ के अनुसार निम्न गति को प्राप्त न हो जायें, इसलिये वह बीच में ही टोक कर कहता है कि हे पिता मुझे किसे दोगे? पिता के चुप रहने पर और नचिकेता के बार–बार कहने पर पिता वाजश्रवस क्रोधित होकर बोले कि तुझे यम को दूंगा। अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए नचिकेता यमलोक चला गयां अपनी अनुपस्थिति में तीन दिन मे से भूखे प्यासे नचिकेता को यम ने अतिथि मानकर तीन वरदान दिये। पहले वरदान में नचिकेता ने यही मांगा, कि मेरे यहां आने से पिता दुखी न हो तथा मेरे लौटने पर मुझे पहचान कर पहले की भांति प्रेम से व्यवहार करें। यह थी एक पुत्र की पिता के प्रति मंगल कामना।

उपनिषद् काल की भांति वेद के युग में भी कर्मशीलता और दानशीलता का मानवीय मूल्यों में विशेष स्थान था वेद का ऋषि कहता है कि सैंकड़ों हाथों से अर्जन करो और सहस्त्रों हाथों से दान करो१६क ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सौ सत्रहवा सूक्त है। नीति शास्त्र में भी धन की दान भोग एवं विनाश–तीनों गतियों का उल्लेख है।१६ आज विश्व में धन के सम्पादन और संवर्धन की होड़ है। बुद्धिवादी वर्ग के मस्तिष्क आज यजुर्वेद ३०/३ के **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।** को भुलाकर **दुरितो** अर्थात् बुराइयों का ही नित्य अविष्कार कर रहे हैं। कपड़ों का उत्पादन बढ़ रहा है पर रुझान नग्नता की ओर है। घोषणा विश्व शान्ति की है, पर तैयारियाँ विश्व विध्वंस की हैं। आज असत् पृथ्वी लोक से उठ कर द्यौलोक को छू रहा है। सत् का दर्शन तक दुर्लभ है।१७ न जाने हम कब से **सत्यमेव जयते नानृतम्.... धर्म एव जयति नाधर्म** के नारे लगा रहे हैं किन्तु असत्य और अधर्म दोनों ही मानवीय मूल्यों का क्षरण करते हुए विश्व व्यापी होकर वियज श्री प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय कालिजों में लड़के लड़कियों के एक से परिधान, हिप्पियों जैसी केश सज्जा, नाच, क्लब, व्यसन, विलास, धूम्रपान, मदिरापान सब पश्चिमीकरण की देन हैं। देश में हर वर्ष सिगरेट की १२१४३ करोड़ की बिक्री हो रही है। मदिरा का बाजार भी ८८०६ करोड़ का है। सिर्फ तम्बाकू की वजह से गत वर्ष ४८ लाख मौतें हुई। सिगरेट शराब दोनों मिलकर कैंसर को जन्म दे रहे हैं। उचित तो यह होगा कि हर वर्ष देश के लाखों लोगों की जान लेने वाले शराब एवं तम्बाकू की कम्पनियों के मालिकों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज हो।

स्वतः ही अपने मानवीय मूल्यों का विनाश करने वाले हम लोगों ने उस आनन्द के श्रोत मोक्ष प्रदान करने वाले (ऋग्वेद ६/११३/११) परमपिता को भुला दिया है किन्तु जीवन के चिरन्तन सत्य इस मृत्युरूपी संसार सागर को पार करने के लिये उस आदित्य वर्ण को जानने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।१८ वेदों में वर्णित ब्रह्म–दर्शन के श्रेय मार्ग को त्याग कर हमने चार्वाक दर्शन१९ का प्रेय मार्ग अपनाया है। आसुरी उपनिषद् के वाममार्गी व्यभिचारी आचार्यों का हम अनुसरण करने लगे हैं। वाममार्गी कालीतन्त्र में लिखा है कि 'म' अक्षर से आरम्भ होने वाली वस्तुएँ मोक्षदायी हैं२० जैसे मद्य, मांस, मछली, मुद्रा (धन) मैथुन और मदिरा के लिये लिखा है कि जो मदिरापान करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।२१ नवम्बर २००६ के **हिन्दुस्तान** दैनिक पत्र में बड़े आकर्षक ढंग से एक सूचना प्रकशित थी कि **मेघालय में मदिरा महोत्सव** बताइये जहां मदिरा के नाम पर महोत्सव रचाये जाते हों वहां वेद मन्त्रों की अवमानना कर२२ आदर्श मानवीय मूल्यों की बात करना व्यर्थ है। वस्तुतः आज भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व ही व्यसनों और विलासों की रंगभूमि बन गया है।

ऋग्वेद (१०/५/६) में लिखा है कि गरूड़ के समान घमण्ड, गीध के समान लोभ, कोक (चिड़ा) के समान काम, कुत्ते के समान मत्सर, उलूक के समान मोह (मूर्खता) और भेड़िये के समान क्रोध को मार भगाइये, अर्थात् अभिमान, लोभ, काम, मत्सर, मोह क्रोध इन षट्विकारों को नष्ट कीजिये२३ ऋग्वेद में जुआ,२४ व्यभिचार एवं चोरी जारी२५ से बचने का पूर्णतया निर्देश है। आज ऐसे बहुत से व्यक्ति कहते हुए मिलते हैं कि हमने थोड़ी सी चोरी कर ली तो क्या हुआ, भगवान् कृष्ण भी तो चोर थे। अपनी सभ्यता संस्कृति और संस्कार को भुलाकर आज बुद्धिजीवी मानव ने उन्नति के नाम पर प्रकृति को विकृत कर दिया है। जंगलों को काटकर वायु को दुर्गन्धित कर दिया है। शिकार खेलकर सृष्टि को अस्वभाविक बना दिया है, मनुष्य अनेक रोगों से पीड़ित है पागलपन बढ़ रहा है। आत्म हत्यायें दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं। मनुष्य को तो यह सोचना चाहिये कि अपनी विवेकशीलता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वह समस्त सांसारिक प्राणियों में श्रेष्ठ है। कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी अपने काव्य में लिखा है **मानव तुम सबसे सुन्दरतम** अतः मनुष्य मनुष्य ही बना रहे२६ वह अज्ञान रूपी अन्धकार में न डूबकर२७ प्रकाश की ओर बढ़ते हुए जगतपिता परमात्मा के उस द्वार तक पहुँचने के लिये प्रयत्नशील हो (अथर्ववेद ८/१/१६) जो श्रद्धा की कंकरीट और विश्वास के सीमेन्ट से बना हो और जिसे संकल्प ने दृढ़ता प्रदान की हो।

हमें गर्व है कि हमारे वैदिक ऋषियों ने वेद के युग की सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों को श्रद्धा विश्वास और संकल्प की दृढ़ता से युगों युगों तक के लिये अमरत्व प्रदान किया। उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्य एक कालिक व एक देशीय नहीं अपितु सार्वभौम एवं सर्वकालिक हैं। मानवीय मूल्यों का उचित रूप से मूल्यांकन करने के लिये जिन विभिन्न मापदण्डों की आवश्यकता है वे वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र विद्यमान है। वेद तो भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति और सभ्यता आदि के ही उद्गम स्थल नहीं हैं अपितु सार्वभौम आदर्श मानवीय मूल्यों के भी आधारभूत ग्रन्थ हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में वैदिक संस्कृति सम्मेलन का भव्य आयोजन नगर निगम प्रेक्षागृह देहरादून में हुआ सम्पन्न

संस्कारों के बिना वैदिक संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती – स्वामी आर्यवेश

वैदिक संस्कृति वैश्विक विचारधारा से ओत-प्रोत है – भगत सिंह कोश्यारी

भोगवादी जीवनशैली संस्कृति को विकृत करती है – प्रो. विट्ठलराव आर्य

अपनी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा स्वयं करनी पड़ेगी – आचार्य आर्य नरेश

उत्तराखण्ड में महर्षि दयानन्द जी का विशेष प्रभाव रहा है – गोविन्द सिंह भण्डारी

उत्तराखण्ड के प्रत्येक जिले में आयोजन किये जायेंगे – आचार्य विश्वमित्र

हरिद्वार में प्रान्तीय स्तर का विशाल आयोजन होगा – इं. प्रेम प्रकाश शर्मा

दिनांक 25 जून, 2023 रविवार को नगर निगम प्रेक्षागृह देरादून में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड की ओर से वैदिक संस्कृति सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. विश्वमित्र आचार्य ने की तथा इसका संयोजन युवा वैदिक विद्वान् गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय आर्य ने किया। सम्मेलन में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी, वैदिक विद्वान् आचार्य आर्य नरेश, महंत कृष्णा गिरी जी महाराज श्री पंचायती अखाड़ा, देहरादून, महंत वीरेन्द्र गिरी जी महाराज बागेश्वर, बहन कल्पना आचार्या, युवा संन्यासी स्वामी योगश्वरानन्द जी, युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस महत्त्वपूर्ण आयोजन में प्रान्तीय सभा के कार्यकारी प्रधान इंजीनियर प्रेम प्रकाश शर्मा, सभा मंत्री श्री प्रभाष चन्द्र अग्रवाल, कार्यकारी मंत्री श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य एवं सहकोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मलिक आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके साथ श्री भगवान सिंह राठौर, मंत्री जिला सभा, श्री नरेन्द्र कुमार जिलासभा कोषाध्यक्ष, श्री महेन्द्र सिंह चौहान पूर्व कोषाध्यक्ष जिला सभा, श्री सुरेन्द्र कुमार वरिष्ठ उपमंत्री जिलासभा एवं श्री रमेश भारती उपप्रधान जिला सभा, श्री अशोक वर्मा का भी सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल द्रोण स्थली की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ हुआ। सम्मेलन के संयोजक आचार्य डॉ. धनंजय ने सम्मेलन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु सभी प्रमुख वक्ताओं का परिचय भी दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों ने ओ३म् पट्ट, साहित्य एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र भेंटकर मंचस्थ सभी विद्वानों एवं नेताओं का स्वागत किया।

अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और कहा कि संस्कारों के बिना संस्कृति की कल्पना निराधार है। आज बच्चों को घर, परिवार, स्कूल व समाज कहीं पर भी संस्कार नहीं दिये जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप सभी बच्चे एवं युवा दिग्भ्रमित होते जा रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बच्चों को सही समय पर सही संस्कार देना प्रारम्भ करें। संस्कारित बच्चे ही संस्कारित युवा बनेंगे और संस्कारित युवा ही समाज एवं राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान करेंगे। हमारी वैदिक संस्कृति भी संस्कारित युवाओं के कारण सुरक्षित रह पायेगी।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अपने उद्बोधन में विश्व स्तर पर चल रही भोगवादी जीवनशैली को संस्कृति को विकृत करने में जिम्मेदार बताया। आज जिस प्रकार से विकास के नाम पर मनुष्य का पतन एवं अवमूल्यन किया जा रहा है यह मानव समाज के लिए जबरदस्त चुनौती है, इसलिए वैदिक संस्कृति त्याग एवं तपस्या पर टिकी हुई होने के कारण उपभोक्तावाद एवं विलासितायुक्त जीवनशैली को समय रहते बदलना होगा, नहीं तो संस्कृति का पतन अवश्यमभावी है।

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भगत सिंह कोश्यारी ने वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारे ऋषियों एवं मुनियों ने

जो सांस्कृतिक धरोहर हमें सौंपी थी वह शेष पृष्ठ 6 पर

होश्यारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज में सात दिवसीय आर्य वीरांगना शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न

बालिकाओं को शिक्षित एवं संस्कारित करना आर्य समाज की प्राथमिकता – स्वामी आर्यवेश

बेटियों को आत्म सम्मान से जीने का हक दिलाना हमारा कर्त्तव्य – बहन पूनम आर्या

गत् 15 से 21 मई, 2023 तक होश्यारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज, रठौड़ा, बागपत, उत्तर प्रदेश में सात दिवसीय आर्य वीरांगना शिविर का कार्यक्रम उत्साह पूर्ण वातावरण में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सात दिन चलने वाले शिविर का उद्घाटन यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ जिसका उद्घाटन श्री धर्मवीर सिंह मलिक, श्री नरेन्द्र आर्य व पूर्व प्रधानाचार्य श्री महक सिंह आर्य ने किया।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के

शेष पृष्ठ 6 पर

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी के 82वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तीन दिवसीय समारोह उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी रहे मुख्य वक्ता

स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को किया सुशोभित

पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन आचार्य महावीर जी ने संभाला

दयानन्द मठ चम्बा के संस्थापक, वैदिक विरक्त मण्डल के अध्यक्ष एवं आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के 82वें जन्मदिवस के अवसर पर 3 से 5 मई, 2023 को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के अतिरिक्त युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य, श्री मधुरम आर्य, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी निर्भयानन्द, स्वामी महानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी सुमित्रानन्द, स्वामी संतोषानन्द, स्वामी देवानन्द आदि संन्यासी सम्मिलित हुए। इस तीन दिवसीय समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी ने सुशोभित किया और श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने वेदपाठ एवं यज्ञ की व्यवस्था का दायित्व संभाला। कार्यक्रम में प्रातः 7 से 9 बजे तक यज्ञ तथा 9 से 11 बजे तक प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। इसी प्रकार सायंकाल 4 से 8 बजे तक यज्ञ, प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम चला। इस पूरे समारोह की व्यवस्था में दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती बृजबाला, उपप्राचार्या श्रीमती करुणा आर्या एवं उनकी अन्य अध्यापिकाओं ने अथक परिश्रम किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी प्रवचन निरन्तर चलते रहे। उनके अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी एवं पं. धर्ममुनि के भी प्रभावशाली व्याख्यान हुए। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि यज्ञ हमारे जीवन का आधार है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है और पर्यावरण से जल, जमीन तथा जंगल की सुरक्षा होती है।

स्वामी आदित्यवेश जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा कि स्वामी जी आर्य जगत के वीतराग संन्यासी थे। उन्होंने यति मण्डल की स्थापना करके आर्य समाज के सभी संन्यासियों को संगठित किया और सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के अध्यक्ष रहते हुए कई अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किये।

पं. धर्ममुनि जी ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डाला और विभिन्न कुरीतियों से दूर रहने की प्रेरणा दी।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ से अपनी टीम के साथ पधारे हुए श्री ऋषिराज आर्य के भजनों का कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली रहा। ऋषिराज आर्य ने विभिन्न सत्रों में मंच का संचालन भी संभाला।

आचार्य महावीर जी ने कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी सहयोगियों से अपेक्षा की कि भविष्य में भी वे अपना योगदान इसी प्रकार देते रहेंगे। आचार्य जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी को यज्ञ पुरुष की संज्ञा देते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से हमारे सभी कार्य निरन्तर सफल हो रहे हैं। उनके पूज्य चरणों की ही कृपा है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हम सभी आगे बढ़ रहे हैं। आचार्य जी ने स्वामी आर्यवेश जी का विशेष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूरे आर्य जगत् में स्वामी आर्यवेश जी एक मात्र ऐसे संन्यासी हैं जिनकी कृपा दृष्टि दयानन्द मठ चम्बा और यहां की समस्त गतिविधियों पर बनी रहती है। अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी वे कार्यक्रम में अवश्य ही पहुंच जाते हैं। इसके लिए उनका जितना भी धन्यवाद किया जाये वह कम है। वे हमारे संरक्षक के रूप में हमें प्रेरणा देते रहते हैं।

कार्यक्रम में प्रिं. कुन्दनलाल गुप्ता, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री अमर सिंह आर्य, श्री विक्रम महाजन, डॉ. अरुण आर्य, श्री सुनील कुमार, श्री मनोज कुमार, श्रीमती नीतू आर्या, सुश्री चेतना आर्या आदि का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में भोजन एवं अतिथि सत्कार का दायित्व बहन सरस्वती आर्या ने बड़ी श्रद्धा के साथ निभाया। यह कार्यक्रम स्वामी सुमेधानन्द जी को समर्पित था और सभी वक्ताओं ने उन्हें अपनी ओर से श्रद्धांजलियाँ अर्पित की।

आर्य समाज गंगाना, जिला–सोनीपत का वार्षिकोत्सव 30 मई, 2023 को उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

प्रिंसिपल आजाद सिंह ने किया कार्यक्रम का संयोजन तथा श्री बलराम आर्य यज्ञ में मुख्य यजमान बने

आर्य समाज गंगाना, जिला–सोनीपत, हरियाणा का वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय के प्रांगण में 30 मई, 2023 को धूमधाम के साथ बनाया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के सैकड़ों गणमान्य महानुभाव एवं भारी संख्या में गांव के स्त्री–पुरुष एवं युवा सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ जिसमें श्री बलराम आर्य मुख्य यजमान बने। यज्ञ स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में सम्पादित हुआ। इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी, प्रिं. आजाद सिंह जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री प्रेम सिंह आर्य भटगांव, श्री धर्मपाल आर्य गोहाना, श्री रविन्द्र सिंह बुटाना आदि महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित थे। यज्ञ के उपरान्त प्रिं. आजाद सिंह के संयोजन में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती का संदर्भ देते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जाति के कल्याण के लिए अनेक उपकार किये हैं। हम उनके उपकारों को कभी भुला नहीं सकते। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रेरणा से अनेक क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदान दिया और हजारों आर्यजनों ने जेल की यातनाएं सही। महर्षि जी ने ही सर्वप्रथम स्त्री और शूद्र को पढ़ने का अधिकार दिलाने की आवाज उठाई। उन्होंने कहा कि यदि स्त्रियों को पढ़ाया नहीं जायेगा तो वे बच्चे का निर्माण कैसे कर सकेंगी। पढ़ने–लिखने तथा जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अधिकार सभी को है। अतः महिलाओं तथा दलितों को शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। स्वामी दयानन्द जी ने जन्मनाजाति को समाज की भयंकर कुरीति बताया

और उन्होंने सब प्रकार के सामाजिक अन्याय एवं असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई। स्वामी दयानन्द जी वेदों की ओर लौटो का ऐतिहासिक आह्वान करते हुए कहते थे कि वेद पूरी मानवता का संविधान है। वेद साम्प्रदायिक नहीं है, बल्कि ईश्वर का ज्ञान है। इस प्रकार से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के प्रचार–प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। आज अन्धविश्वास, पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार, नशाखोरी, गैरबराबरी, भ्रष्टाचार तथा शोषण बढ़ रहा है। ऐसे में आर्य समाज को आगे आना चाहिए और महर्षि दयानन्द जी का संदेश घर–घर पहुंचाना चाहिए।

स्वामी आदित्यवेश जी ने युवाओं का आह्वान किया कि वे अश्लीलता, नशाखोरी, दहेज एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध अभियान चलायें और वैदिक संस्कृति को पुर्नस्थापित करने के लिए संकल्प लें।

प्रिं. आजाद सिंह जी ने अपने क्षेत्र के प्रत्येक गांव में आर्य समाज की इकाईयां खोलने तथा स्त्री आर्य समाज एवं आर्य युवक परिषदों की स्थापना की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति 200 लोगों से मिलकर महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र से सम्बन्धित ट्रैक्ट या चित्र प्रदान करें। यदि प्रत्येक आर्य 200–200 लोगों तक सम्पर्क करेंगे तो 200 करोड़ से भी ज्यादा लोग महर्षि के विचारों से प्रेरित होंगे। कार्यक्रम अत्यन्त सार्थक, सफल एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित लोगों ने ऋषि लंगर में सहभोज किया। श्री बलराम आर्य जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह जी के 80वें जन्मोत्सव की सूचना

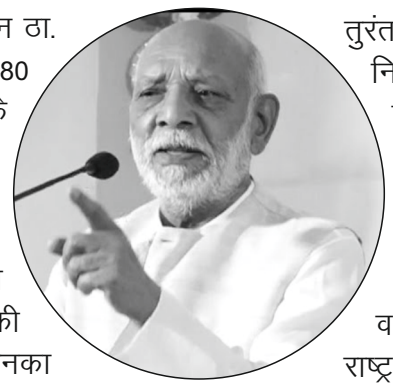

सभी आर्य बंधुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह जी इस वर्ष 19 सितम्बर, 2023 को अपने जीवन के 80 वसंत पूर्ण करने जा रहे हैं। महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा, वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए किए गए उनके अतुलनीय पुरूषार्थ तथा वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों व आर्य संस्थाओं के संरक्षण व संवर्धन के लिए उनके द्वारा किए जा रहे महनीय प्रयासों को देखते हुए आर्य नेताओं व विद्वज्जनों की दिल्ली में 11 जनवरी, 2023 की बैठक में निर्णय लिया गया कि 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनका एक भव्य समारोह में अभिनंदन किया जाए।

उनके लिए भेंट किए जाने वाले अभिनंदन ग्रंथ की तैयारी के लिए आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री की अध्यक्षता में एक संपादक मंडल भी गठित किया गया है। आर्य समाज के सभी नेताओं, मनीषियों, विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, उपदेशकों आदि से अनुरोध है कि ठा. विक्रम सिंह जी के सम्बन्ध में यदि आपके पास कोई संस्मरण हो, किसी कार्यक्रम के फोटोग्राफ हों अथवा उनके व्यक्तित्व–कृतित्व से संबंधित जानकारियां हो, व्यक्तिगत अनुभव हों तो तुरंत टाइप करवाकर या हस्तलिखित रूप में उसे हमारे स्पीड पोस्ट से निम्नलिखित ए–41, द्वितीय तल, लाजपत नगर–2, नई दिल्ली–110024 के पते पर भिजवाने का प्रबन्ध करें अथवा rashtranirmanparty@gmail.com ई–मेल पर भेजने का कष्ट करें।

इसी प्रकार वैदिक सिद्धांतों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता, महर्षि दयानंद व आर्य समाज का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, शिक्षा व राजनीति के विषय में महर्षि दयानंद का चिंतन, महर्षि दयानंद का राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विद्वज्जनों से अपने लेख भेजने हेतु निवेदन है।

आर्य कवियों से भी अनुरोध किया जाता है कि आप भी ठाकुर विक्रम सिंह जी के जीवन से संबंधित अपनी काव्य रचना शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें।

इस अवसर पर किए जाने वाले समारोह के संबंध में आपके पास यदि कोई सुझाव हों तो अवश्य अवगत कराएं। इस अद्भुत आयोजन में आपके पूर्ण सहयोग की कामना है। तन–मन–धन से इस आयोजन में सहभागी बन आर्य समाज के नवनिर्माण के प्रयासों के साक्षी बनें।

पृष्ठ 4 का शेष

होश्यारी देवी गर्ल्स इण्टर कॉलेज में सात दिवसीय आर्य वीरांगना शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न

प्रधान श्री राजेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि इस शिविर में लगभग 135 बालिकाएं भाग ले रही हैं। इस सात दिवसीय शिविर में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या एवं एकता आर्या द्वारा कन्याओं को जूडो–कराटे, लाठी, भाला आदि शस्त्र विद्या, योगासन एवं अन्य शारीरिक व्यायामों के साथ नैतिक शिक्षा, वैदिक संस्कृति व यज्ञ करना आदि बौद्धिक ज्ञान प्रदान किये गये।

शिविर के समापन सत्र में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने पहुंचकर शिविर में भाग ले रही कन्याओं को वैदिक ज्ञान मार्ग पर चलने और बेटियों को आत्म निर्भर तथा आत्म संयम से जीवनयापन करने की प्रेरणा दी और उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में ऐसे शिविरों का आयोजन अवश्य किया जाना चाहिए जिससे बेटियों को आत्म रक्षा के गुर सिखाये जा सकें। इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए मैं विद्यालय की प्रबन्ध समिति तथा समस्त स्टाफ की भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ।

कार्यक्रम में होश्यारी कन्या महाविद्यालय के प्रधान श्री रामपाल शास्त्री, श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री धर्मेन्द्र कुमार, स्वामी सुरेन्द्रानन्द सरस्वती, श्री रिपुदमन सिंह आर्य, आर्यवीर दल बागपत के संचालक श्री यतेन्द्र आर्य, विद्यालय की प्रधानाचार्या मुनेश देवी, प्रबन्धक श्री धर्मवीर सिंह के अतिरिक्त जिला सभा के पदाधिकारी श्री पाल आर्य, श्री ब्रह्मपाल सिंह, श्री गिरवर सिंह, श्री मनोज आर्य के अतिरिक्त अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सात दिवसीय शिविर भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में वैदिक संस्कृति सम्मेलन का भव्य आयोजन नगर निगम प्रेक्षागृह देहरादून में हुआ सम्पन्न

वैश्विक विचारधारा से ओत–प्रोत थी। वैदिक संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति है। अतः ज्ञान की बातें या अच्छी बातें जिधर से भी हमें प्राप्त हों उन्हें हमें अवश्य ग्रहण करना चाहिए। आज वैदिक संस्कृति की रक्षा करना मानवता के लिए परम आवश्यक है, क्योंकि वैदिक संस्कृति से सही अर्थों में मानव का निर्माण होता है और मानव का निर्माण ही पूरे मानव समाज को मजबूत संस्कारों से ओत–प्रोत कर सकता है।

आचार्य आर्य नरेश ने अपने ओजस्वी विचारों के द्वारा समाज में चल रहे अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा अपसंस्कृति को समाज एवं राष्ट्र के भविष्य के लिए हानिकारक बताया। उन्होंने कहा कि आज हमने अपने खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा और विचारों को भी छोड़ दिया है और विकृत संस्कृति की जूठन खाने की प्रवृति हमारे युवाओं में बढ़ती जा रही है जो अत्यन्त चिन्ता की बात है। वैदिक संस्कृति को आचरण में लाना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम अपनी संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे।

स्वामी योगश्वरानन्द जी ने बड़े जोश के साथ संस्कृति रक्षा को अत्यन्त आवश्यक बताया और कहा कि हम औरों को दोष देना बन्द करें और अपने घर परिवारों में, समाज में, शिक्षा प्रणाली में, नैतिक मूल्यों एवं धर्म शिक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ाना व सिखाना प्रारम्भ करें। उन्होंने कहा कि हम अपने बच्चों को संस्कार न देकर औरों की निन्दा में ही लगे रहते हैं। इससे हम कभी भी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकते।

महन्त कृष्णा गिरी जी महाराज ने अपने कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वे संस्कृत विद्यालय चलाते हैं और उनमें पढ़ने वाले बच्चों को संस्कार देने का कार्य करते हैं। ये कार्य हम आर्य समाज के साथ मिलकर करने को तैयार हैं।

महन्त वीरेन्द्र गिरी जी महाराज ने वैदिक संस्कृति को पूरे विश्व के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति त्यागवाद पर टिकी है, किन्तु वर्तमान में भोगवादी की आंधी चल रही है। अतः हमें और अधिक जागरूक होकर संस्कृति के मूल्यों का प्रचार–प्रसार करना होगा। मैं आप सभी को चीन बॉर्डर पर स्थित अपने ओ३म् पर्वत पर आने का निमंत्रण देता हूँ, हम और आप सब मिलकर सांस्कृति अभियान चलाने का संकल्प लें।

स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने वक्तव्य में युवाओं को शिविरों के माध्यम से संस्कारति एवं प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हम निरन्तर युवा निर्माण शिविरों का आयोजन करके युवाओं को वैदिक संस्कृति के मूल्यों से परिचित कराते हैं। उन्हें वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करते हैं। यह युवा निर्माण अभियान पूरे देश में चलना चाहिए, ताकि बढ़ती हुई कुसंस्कृति रोकी जा सके।

उत्तराखण्ड सभा के पूर्व प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी ने कहा कि उत्तराखण्ड में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष प्रभाव रहा है। स्वामी देहरादून भी आये और जोशीमठ तथा अन्य स्थानों पर भी उन्होंने भ्रमण किया। उनके अनुयायियों ने उत्तराखण्ड में जातिप्रथा, पशुबलि, मांसाहार एवं नशाखोरी के विरुद्ध प्रारम्भ से ही अभियान चलाये हैं जिसके परिणामस्वरूप उत्तराखण्ड की बहुत बड़ी जनसंख्या अपने आपको आर्य कहकर गौरवान्वित अनुभव करती है।

इंजीनियर प्रेम प्रकाश शर्मा ने सभी आगन्तुक महानुभाव का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए घोषणा की कि आगामी अक्टूबर माह में विशाल आर्य महासम्मेलन हरिद्वार में आयोजित किया जायेगा।

सभा प्रधान आचार्य विश्वमित्र जी ने उत्तराखण्ड के प्रत्येक जिले में कार्यकर्ता सम्मेलन एवं विविध आयोजनों की घोषणा की।

आचार्या कल्पना आर्या ने महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि महिलाओं को फैशन तथा भोगवादी विचारों से अपने आपको दूर रखते हुए आदर्श जीवनशैली अपनानी चाहिए। महिला समाज की आधार होती हैं। यदि महिलाएं संस्कारित होंगी तो वे अपनी संस्तानों को संस्कारित करने में सफल हो सकती हैं।

इस कार्यक्रम में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास आर्य, आर्य समाज हरिद्वार के प्रबन्धक डॉ. वीरेन्द्र पंवार, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के पूर्व प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी एडवोकेट एवं पूर्व मंत्री श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, सभा के पूर्व प्रधान श्री मानपाल सिंह राठी, हरिद्वार जिलासभा के पूर्व प्रधान श्री हाकम सिंह आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की उपप्रधान श्रीमती इन्दूबाला आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभा के कार्यकारी मंत्री श्री शत्रुघ्न मौर्य ने पूरे कार्यक्रम का उपसंहार करते हुए सभी सहयोगियों का, आगन्तुक अतिथियों, विद्वानों तथा संन्यासियों का आभार प्रगट किया।

सत्यार्थ प्रकाश से क्या पाया मैंने

- ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, वी. एस. एम.

'सत्यार्थ प्रकाश' मानव मात्र की धरोहर है और है मेरी पैतृक संपत्ति। पिछली तीन पीढ़ियों से हमारे व्यक्तित्व विकास का साधन रहा है सत्यार्थ प्रकाश। सन् 1883 ई. में महाराणा जी की नगरी उदयपुर, राजपूताना में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे संस्करण का लेखन पूरा किया। प्रथम संस्करण की अशुद्धियों को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं सुधारा था। वैदिक यंत्रालय, प्रयाग के प्रबन्धकर्त्ता, मुंशी समर्थदान ने मुद्रित करके जन सामान्य को उपलब्ध कराया तो समस्त भारत में वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। मार्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की नगरी, अयोध्या अछूती न रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वयं अयोध्या पधारेथे, किन्तु वह था सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से कई वर्ष पूर्व फिर भी, नये विचारों का प्रचंड वेग अयोध्या के निकटवर्ती ग्राम बरौरा को, जहाँ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन की आधी शताब्दी बाद मेरा जन्म हुआ, भ्रांति भरी निद्रा से जगा न पाया था। अनेक सुधारक आये और चले गये किन्तु बरौरा ग्राम अज्ञान के सागर में 'अनन्त शयनम' की स्थिति में रहा। आया प्रथम विश्व युद्ध सन् 1914-18, मेरे पितामह के छोटे भाई, सम्राट जार्ज की तरफ से हिटलर पूर्व जर्मनी से युद्ध करने विदेश गये। जब वे लौटे तो भ्रांतियों का भार उतार चुके थे, उनके हाथ में थी एक पुस्तक, सत्यार्थ पकाश, मन-मस्तिष्क दयानन्द सन्देश से ओत-प्रोत थे। 'जनाब' का लोप हो गया था, 'मुंशी' का स्थान ले लिया 'महाशय' ने महाशय राम लोटन सावंत।

सत्यार्थ प्रकाश का पठन-पाठन परिवार में आरम्भ हुआ। परिवार और पड़ोस की महिलाओं के लिए सत्यार्थ प्रकाश 'श्रुति' समान था अक्षर ज्ञान का महिला जगत में अभाव था। पिछले आठ-नौ दशकों में, सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय और तृतीय समुल्लासों ने महिलाओं में हलचल मचा दी। उनमें शिक्षा का अभूतपूर्व प्रसार हुआ। मेरी दादी (पितामह की पत्नी) जो पिछली शताब्दी की संन्ध्या में ससुराल की ड्योढ़ी में दाखिल हुई थीं। अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ थीं। मेरी मां ने किसी प्रकार हस्ताक्षर का प्रयास किया था और उस समय को देखते हुए प्रयास सफल माना गया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव में नारी शिक्षा लोकप्रिय हुई। मेरे बच्चों की माँ, मुझसे विवाह के समय संस्कृत में एम. ए. थीं और अब वेदपाठी हैं। मेरी बेटियों ने विदेश में पी. एच. डी. और एम. ए. किया विदेशी भाषाओं में। नारी शिक्षा का यह उत्थान, ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश द्वारा लाये गये जन-जागरण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आइये लौटते हैं अपने गाँव में सत्यार्थ प्रकाश आगमन काल में। गाँव के बीचों बीच बना बड़ा शिवालय धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था और है। राम के राज्य में भी शैव मत उतना ही लोकप्रिय था जितना कि वैष्णव। किन्तु काठियावाड़ स्थित टंकारा के शैवों के समान कट्टरता न थी बरौरा में। तभी तो किसी मूलशंकर ने जन्म नहीं लिया। वर्ष प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि आती रही, उपवास और नींद के दोहरे प्रहार को न सह सकने वाले शिवभक्त आधी रात होते-होते सपने में साक्षात शिव के दर्शन से संतुष्ट होते रहे। गणेश के वाहन, गणेश के पिता पर चढ़ाया गया छप्पन भोग खाते रहे, मुक्त और स्वच्छंद चूहे शिवलिंग पर शवासन करते रहे किन्तु कोई मूलशंकर समान बालक सच्चे शिव की खोज में न निकला। हाँ, बालक मूलशंकर से प्रौढ़ दयानन्द बने आदित्य ब्रह्मचारी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश ने बरौरा के जिज्ञासुओं के ज्ञान चक्षु खोल दिये। गाँव में और आस-पास अविद्या और अंधकार छाये हुए थे। जड़पूजा का बोल बाला था। वेदोक्त ईश्वर की स्तुति का प्रायः लोप हो चला था। चेचक निकलने पर नीम के पत्ते के नीचे हाथी-घोड़े और स्त्री की आकृति के खिलौनों को रखकर 'देवी' को भेंट चढ़ाई जाती थी। यहाँ तक कि बच्चों के बीमार पड़ने पर प्रेत-पिशाच शमन के लिए ओझा-सोखा बुलाये जाते थे। इन भ्रांतियों के भूतों को भगाने के लिए मेरे पिता, महाशय राम नरेश सावंत, और उनके सहयोगियों को सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास से सहायता मिली।

भ्रांतियों का भार ढोने से युवा वर्ग कतराने लगा। कभी-कभी तो पोंगा-पंथियों ने जाति बाहर करने की धमकी दी। 'नीम का चौरा' अब शीतला माता (चेचक) के शमन का स्थान नहीं अपितु नई लहर की गोष्ठी का केन्द्र बन गया था। होली मिलन में अछूत भी आमंत्रित किये गये। बुजुर्गों ने पोप पंथी दबाव में शूद्रों से होली में गले मिलने पर हुक्का पानी बंद कर दिया। यह सामाजिक दंड प्रभावहीन हुआ। देव दयानन्द के दीवाने तो हुक्का पीते नहीं थे। सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास, में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं लिखा है :-

बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारी तदुच्यते।

(जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें)

एकादश समुल्लास में अवैदिक मत-मतांतरों के बारे में सही स्थिति जानने के बाद बच्चों की बीमारी में उचित उपचार होने लगा। कपटी और धूर्त ओझा अपने कपोल कल्पित घृणित प्रेत पिशाचों के साथ छू मंतर हो गये। नवीन आर्यों के ज्ञान का स्रोत सत्यार्थ प्रकाश सच्चा पथ प्रदर्शक बना।

सत्यार्थ प्रकाश का परिवार में प्रभावी होना मेरे स्वयं के लिए सदैव सर्वहितकारी रहा। आर्यावर्त में महाभारत उपरांत पनपे वेद विरूद्ध मत-मतांतरों के अतिरिक्त किरानी-कुरानी पोप लीलाओं से सुरक्षा प्रदान करने वाला कवच रहा सत्यार्थ प्रकाश। किरानी-कुरानी ब्यूह और कुचक्र को ध्वस्त करने वाला ब्रह्मास्त्र है सत्यार्थ प्रकाश। मेरे कथन की पुष्टि करते हैं मेरे जीवन के कई दिन और पल।

मेरा जन्म शनिवार को हुआ। उस समय शनिवार शुभ नहीं माना जाता था। मेरे संयुक्त परिवार में मेरे जन्म से खुशी की लहर दौड़ गई किन्तु गाँव की बड़ी-बूढ़ियों ने शनिवार को अशुभ मानते हुए मुँह बिचकाया। एक अन्य अज्ञानी ने सलाह दी कि सूरापुर के मौलवी पहुँचे हुए हैं और नवजात शिशु की शनि से रक्षा के लिए उनका बनाया ताबीज प्रभावी होगा। स्थानीय पोंगा पंथी पोप ने तो 'शनिदेव शमन' की विधि लिखकर दे दी। बलि के बकरे की आयु एक वर्ष एक महीन एक दिन एक घंटा निर्धारित की गई। दो पीढ़ियों से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने वाले और आर्य पथ के पथिक-परिवार को 'शनि शमन' की बातें न भायीं। जब मेरे पिता ने पौराणिक पंडित को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास की यह पंक्ति दिखाई : य शनैश्चरति स शनैश्चरः, जो सबमें सहज से प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है।

तो वे विद्याविहीन महाशय ऐसे गायब हुए जैसे गधे के सर से सींग। शैशव में और बाल्यकाल में मेरी तो चांदी रही। न गले में ताबीज लटकानी पड़ी और न बाजू में बांधनी पड़ी। 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाती' ऐसी कहावत है। किन्तु मेरे संदर्भ में खैर मनाने से एक वर्ष एक महीना एक दिन एक घंटा वाले बकरे की जान बच गई। मेरे जीवन में 'शनिवार' शुभ दिन माना जाने लगा। सेना में नये स्थान पर नये पद का कार्यभार मैंने शनिवार को सम्हाला था। न कभी अनिष्ट की संभावना मन में खटकी और न कभी कोई अनिष्ट शनिवार को नया काम शुरू करनेके कारण हुआ। मन में यही दृढ़ विश्वास रहा कि 'शनैश्चर' तो परमात्मा का वैदिक नाम है। 'शनि शमन' की बात तो मूर्ख मस्तिष्क और निर्बल मन की उपज है। इस उपज का अन्न पौराणिक पंडित के खलिहान और कोष्ठक में ही जाता है। किन्तु धूमिल होती है हमारे समाज की छवि। 'शनैश्चर' परमपिता परमात्मा अपने पुत्रों-पुत्रियों का अहित क्यों करेंगे? इस अचल सत्य से ही हमारा मन स्थिर है। नि'संदेह 'शनि शमन' के भूत रूपी भ्रांति को भगाना, सत्यार्थ प्रकाश के पठन से ही संभव हो सका।

भूत-प्रेत पिशाच आदि से कभी भी मेरा लगाव नहीं रहा, आत्मीयता का प्रश्न ही नहीं उठता। बाल्यकाल और किशोरावस्था में भी कभी समवयस्कों ने तो कभी अविद्याग्रस्त सेवक-सेविका ने भूत-प्रेत की मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाकर मेरे मन को बहकाया। कभी-कभी मन में डर समाया भी। अंधकार में सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट से मन भयभीत हो जाता था। अंधेरे कोने से चुड़ैल के चलने का आभास होता था।

यों उस समय 'भटकती आत्मा' को होना या न होना मेरी अपनी कल्पना से परे था। फिर भी, रात के बारह बजे 'जिन' द्वारा शाही हलवाई का घंटा बजाना और सोने की मुहरें देकर रसीली चमचम खरीदने की कहानी, काल्पनिक होते हुए भी मन में मिठास भर देती थी। भय, कौतूहल, आशंका और चमचमी मिठास में झूलते हुए दिन और रात बीतते रहे। रात को कभी-कभी इसलिए जागता रहता था कि शायद कोई भूला भटका 'जिन' चमचम का एक दोना हमारे सिरहाने सरका जाए। परन्तु ऐसा कभी भी नहीं हुआ और हो भी नहीं सकता था। कल्पना की उड़ान और कठोर सत्य में उतना ही अंतर है जितना कि रात और दिन में। अपनी उलझन से मैंने पिता जी को परिचित कराया और फिर आरम्भ हुआ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास का विधिवत पाठ, विशेष कर 'भूत प्रेतादि निषेध प्रकरण' का। फिर क्या था, विज्ञान के समीर ने शंका के बादलों का व्यूह छिन्न-भिन्न कर दिया। आया नया सवेरा, सूर्योदय और ज्ञानोदय। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लिखे शब्द और वाक्य मानस पटल पर अंकित हो गए। प्रेत से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि गुरु के प्राणांत होने पर उनके मृतक शरीर को ही 'प्रेत' कहते हैं। भूत कौन है? जो बीत गया वही भूत है, जो जीवित है वही वर्तमान है। अतः वर्तमान को भूत से भयभीत कभी नहीं होना चाहिए।

भटकती आत्मा क्या है? यह केवल भटकते मन की उपज है। विद्या के अभाव में अविद्या मन पर हावी हो जाती है। प्रकाश न रहने पर अंधकार अपने आप ही छा जाता है। जब सत्य और असत्य के बीच भेद करने की बौद्धिक शक्ति क्षीण हो जाती है तो 'अकाल मृत्यु' और फलस्वरूप 'भटकती आत्मा' की कपोल कल्पित बात से निर्बल मन भयभीत हो जाता है। मृत्यु होने पर मृतक का शरीर भस्म कर दिया जाता है। आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है, अतः 'भटकती आत्मा' का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्द हैं :

और जब शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है, अर्थात वह अमुकनामा पुरुष था। जिसने उत्पन्न हो, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। .... जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसका भय और शंका रूप भूत-प्रेत, शाकिनी, डाकिनी उनके भ्रमजाल दुखदायक होते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयो समुल्लास)

इसी संदर्भ में ऋषिवर सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं :-

'देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? स्पष्ट हो गया सत्यार्थ प्रकाश से कि हमें किसी भी पोंगा पंथी रचित भटकती आत्मा के भ्रमजाल में नहीं फंसना चाहिए। ग्यारहवें समुल्लास में विभिन्न ढोंगी मत-मतान्तरों की पोल खोल दी है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। जैन मत के मानने वाले न केवल घोर नास्तिक हैं अपितु 24 तीर्थंकरों द्वारा फैलाये गये भ्रमजाल में उलझे हुए हैं, यह मुझे 12वें समुल्लास से स्पष्ट हो गया। वस्तुतः चार्बाक के नास्तिक मत की समीक्षा, ऋषिवर ने 12वें समुल्लास के आरम्भ में ही किया और फिर जैन व बौद्ध मत पर वैदिक सूर्य का प्रकाश डाल कर उन मतावलंबियों को सत्य सनातन वैदिक धर्म मार्ग पर चलने का निमंत्रण दिया। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के सिद्धान्त ने ही सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण में दो समुल्लास और जुड़वाए : 13वें में ईसाई मत का विषय और 14वें में मुसलमानों के मत का विषय है। ईसाई मत और यवन मत, यद्यपि भारतीय मत नहीं है किन्तु उनकी समीक्षा से हम भारतीयों की आंखें खुल गईं। कम से कम मुझे तो विदित हो गया कि भारत में आकर ये विदेशी हमारे वैदिक धर्म पर झूठे आक्षेप लगाते रहे जबकि स्वयं उनके किरानी और कुरानी मत अविद्या और अंधविश्वास की ही उपज है। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से दूध का दूध और पानी का पानी कर देना संभव हो सका। सत्यार्थ प्रकाश का पाठक निडर होकर, अपने वैदिक धर्म पर मिथ्या आक्षेप लगाने वाले को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम, समर्थ और तत्पर है। जब एक क्रिस्तान पादरी ने कहा कि गऊ माता के पति, बैल पिता को मैला खाते देखा गया तो उत्तर था 'वह बैल ईसाई हो गया होगा'। अस्तु। सत्यार्थ प्रकाश की मुझे सबसे बड़ी देन है : आस्तिकता। मैं दृढ़ आस्तिक हूँ आज। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार उनकी सच्ची आस्तिकता सत्यार्थ प्रकाश में निहित है। अनेक महानुभाव सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर नास्तिक से आस्तिक बने। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य महाराणा सज्जन सिंह, मेवाड़ नरेश, रावराजा सर नाहर सिंह वर्मा, शाहपुराधीश उनमें मुख्य थे। पंडित गुरुदत्त ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा किन्तु उनमें नास्तिकता से आस्तिकता आई थी ऋषिवर द्वारा प्राण त्यागने का दृश्य देखकर।

सत्यार्थ प्रकाश ने मेरे समान अनेक मनुष्यों का जीवन सुधार दिया। भविष्य में असीम श्रद्धा से वेदपाठ करने वाले, सत्यार्थ पढ़ने वाले ही होंगे - यह हम आर्यों का विश्वास है - अटूट विश्वास।

- उपवन', 609, सैक्टर-29, नायेडा-3

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के निष्ठावान् एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के लिए सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद् द्वारा

44वाँ कैप्सूल कैम्प, तपोवन आश्रम देहरादून में आयोजित हुआ

सिद्धान्त एवं योगाभ्यास का दिया गया प्रशिक्षण

सन् 1981 में वीतराग, तपोनिष्ठ आर्य संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की प्रेरणा से प्रारम्भ किये गये कार्यकर्ता कैप्सूल कैम्प का आयोजन निरन्तर निर्वाद गति से गत् 44 वर्ष से किया जा रहा है। प्रतिवर्ष जून माह के अन्तिम सप्ताह में देश के किसी रमणीक एवं शान्त वातावरण में स्थित संस्था में इस शिविर का आयोजन होता है। इस वर्ष कार्यकर्ता कैप्सूल कैम्प 22 जून, 2023 से 28 जून, 2023 तक वैदिक साधन तपोवन आश्रम, देहरादून में किया गया। शिविर में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी पूरा समय रहे और सभी शिविरार्थी कार्यकर्ताओं को वैदिक सिद्धान्तों एवं योग साधना का प्रशिक्षण दिया। इस पूरे शिवर का संयोजन तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने किया और सूक्ष्म व्यायाम तथा आसन आदि का अभ्यास ब्र. सहसरपाल ने कराया। शिविर में सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, हरियाणा प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास, श्री सत्यवीर आर्य एवं प्रिं. राजकुमार आर्य कैथल, प्रिं. आजाद सिंह एवं श्री बलराम आर्य सोनीपत, डॉ. राजेश आर्य एवं पहलवान मनोज कुमार रोहतक, बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या आदि प्रमुख पदाधिकारियों के अतिरिक्त सभी सक्रिय कार्यकर्ता शिविर में सम्मिलित रहे।

हिमालय की सुरम्य घाटियों में स्थित वैदिक साधन तपोवन आश्रम का वातावरण अत्यन्त रमणीक एवं मनमोहक है। आश्रम के मंत्री एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व श्री प्रेम प्रकाश शर्मा एवं उनके सहयोगियों ने शिविर में अपना विशेष योगदान दिया। प्रातः 4 बजे से लेकर रात्रि 9 बजे तक शिविर की दिनचर्या एवं कार्यक्रम अति व्यस्त रहता था। दिनभर विविध सत्रों के माध्यम से शिविरार्थियों को सिद्धान्त का प्रशिक्षण दिया जाता था तथा प्रातः एवं सायं ध्यान का अभ्यास कराया जाता था। शंका–समाधान, प्रश्नोत्तरी के द्वारा शिविरार्थी ज्ञान लाभ प्राप्त करते थे। सभी शिविरार्थी शिविर की दिनचर्या प्रशिक्षण एवं व्यवस्था से संतुष्ट एवं उत्साहित थे। शिविर के दौरान टाउन हाल देहरादून में प्रान्तीय सभा द्वारा आयोजित संस्कृति सम्मेलन में भी सभी शिविरार्थियों को सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार एक दिन मसूरी भ्रमण तथा उत्तराखण्ड के विख्यात गुरुकुल पौंधा में भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय एवं उनके सभी सहयोगियों ने शिविरार्थियों के लिए सुरुचिकर भोजन एवं ऋतु के विशेष फल आम खिलाकर तृप्त कर दिया। गुरुकुल के वातावरण से सभी शिविरार्थी अत्यन्त प्रभावित हुए, वहीं पर आचार्य धनंजय जी ने सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य से दिसम्बर माह में हैदराबाद में आयोजित करने का प्रस्ताव भी रखा जिसे सहर्ष स्वीकार कर लिया गया और निश्चय हुआ कि शीतकालीन छुट्टियों में एक शिविर दक्षिण भारत के प्रमुख नगर हैदराबाद में लगाया जायेगा।

शिविर में प्रो. विट्ठलराव आर्य, स्वामी आदित्यवेश, स्वामी योगश्वरानन्द एवं बहन पूनम आर्या के व्याख्यान भी हुए। 28 जून, 2023 को नियमित संन्ध्या एवं स्वाध्याय करने के संकल्प के साथ शिविर का समापन हो गया और सभी उत्साह एवं उल्लास के साथ अपने–अपने स्थान को लौट गये। कार्यकर्ता कैप्सूल कैम्प कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्जा, विचार एवं साधना की शक्ति को जागृत करने का कार्य करता है।

आर्य समाज बड़ावद, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के वार्षिक समारोह में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

युवा वैदिक विद्वान् आचार्य जयेन्द्र जी ने किया कार्यक्रम का संयोजन तथा स्वामी यज्ञमुनि जी की रही गरिममयी उपस्थिति

गत् 21 मई, 2023 रविवार को आर्य समाज बड़ावद, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह में आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। आर्य समाज के भवन में आयोजित इस कार्यक्रम का संयोजन युवा वैदिक विद्वान् और गुरुकुल नोएड के आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी ने कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम में क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी की गरिमयी उपस्थिति रही। युवा भजनोपदेशक तृषपाल आर्य जी के भजनों का कार्यक्रम रहा।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है और वायु, जल, पृथ्वी, आकाश आदि प्रदूषण मुक्त बनते हैं। उन्होंने यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यज्ञ की अग्नि में डाली जाने वाली विभिन्न औषधियां शुद्ध घृत, मेवे एवं सुगन्धित पदार्थ अग्नि के द्वारा सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जाते हैं और जहरीली हवा को तथा विषाणुओं एवं कीटाणुओं को नष्ट करते हैं। यज्ञ से पेड़–पौधों को भी उतनी ही ऊर्जा मिलती है जितनी मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों को मिलती है। प्राचीनकाल में घर–घर में यज्ञ होते थे और पूरे वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाया जाता था। आज वह परम्परा फिर से प्रारम्भ होनी चाहिए। आर्य समाज इस कार्य को और अधिक तीव्र गति से करे। स्वामी आर्यवेश जी ने क्षेत्र में यज्ञों के द्वारा वेद प्रचार का अभियान चलाने पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि बड़ावद गांव से निकले एक युवक डॉ. जयेन्द्र आचार्य ने आज पूरे देश में अपनी विद्वता की धाक जमा रखी है। डॉ. जयेन्द्र जी की वाणी में विशेष प्रभाव है और वे जहां भी जाते हैं वहीं पर अपनी तेजस्वी वाणी का प्रभाव छोड़कर आते हैं। स्वामी जी ने गांव की आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया और उन्हें बधाई दी कि गांव में आर्य समाज का इतना सुन्दर प्रांगण बनाया है। ऐसा ग्रामीण क्षेत्र में कम ही देखने को मिलता है। इससे पता चलता है कि इस गांव में आर्य समाज की जड़ें कितनी गहरी है।

स्वामी आर्यवेश जी के उद्बोधन के उपरान्त स्वामी यज्ञमुनि तथा अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे और भजनोपदेशक श्री तृषपाल आर्य जी के भजनों का भी लोगों आनन्द उठाया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।